पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

बांदीघाटी

ग्राम पंचायत - दामड़ी

ब्लॉक/पंचायत समिति - दोवड़ा

तहसील एवं जिला - डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

बांदी घाटी गाँव का परिचय

बांदी घाटी गाँव दामड़ी ग्राम पंचायत का एक राजस्व गाँव है। यह जिला मुख्यालय डूंगरपुर से 20 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में बसा हुआ है। दामड़ी पंचायत में 2 गाँव हैं - दामड़ी और बांदी घाटी। बांदी घाटी गाँव के निकटवर्ती गाँव समोता, समोता का ओड़ा, हडमतिया, पाल मांडव, रागेला, खांडा, दरा, देवली, कहारी हैं। बांदी घाटी गाँव में अभी शिलालेख नहीं हुआ है, लेकिन लोगों को पेसा कानून की पूरी जानकारी है । बांदी घाटी दामड़ी पंचायत का छोटा गाँव है, जिसमें मात्र 60 घर हैं। गाँव की आबादी लगभग 300 है । गाँव में केवल एस. टी. जाति के परमार उपजाति के लोग ही निवास करते हैं । सभी लोग खेतिहर किसान और मजदूर हैं । वर्ष 2018 से गाँव में वागड़ मजदूर किसान संगठन के कार्यकताओं के द्वारा पेसा कानून की जानकारी और जागरूकता का प्रसार करने के लिए बैठकें और अभियान चलाये जा रहे हैं । जिसमे गाँव के लोग भागीदारी करते हैं । गाँव की पूरी जमीन का रकबा 86 हेक्टेयर है, जिसमें कृषि योग्य जमीन, बिलानाम और पहाड़ शामिल हैं । बिलानाम जमीन पर गाँव का कब्ज़ा है । गाँव में चारागाह और जंगल की जमीन बिल्कुल नहीं है । गाँव में सालों पहले जंगल था, लेकिन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और नए पेड़ न लगाने के कारण जंगल के साथ-साथ गाँव को होने वाली आय और मिलने वाली लघु वन उपज भी अब नहीं मिलती है । गाँव की पूरी जमीन ऊबड़-खाबड़ और छोटी पहाडियों वाली है। गाँव में कोई नदी, नाला या सिंचाई का साधन नहीं है। जल स्तर बहुत ही नीचे चला गया है । लोग खेती और रोजगार के लिए मनरेगा पर ही निर्भर हैं । गरीबी और बेरोजगारी का यह आलम है कि गाँव में युवा और पढ़े-लिखे लोग बेहतर जिन्दगी की तलाश में गाँव छोड़ शहरों की ओर पलायन कर चुके हैं। और गाँव में अब महिलायें और बुजुर्ग ही बचे हैं । गाँव में 60 से 80 साल के वृद्धजन भी मजदूरी करते हैं । एक समाचार पत्र के हवाले से खबर छपी थी कि डूंगरपुर में 80 साल के बुजुर्ग भी मनरेगा में काम कर रहे हैं, क्योंकि उनके पास कोई और काम नहीं है। इस उम्र में और घर चलाने के लिए मजदूरी करना मजबूरी है। गाँव में कुछ परिवार वाले घर के बाहर ही छोटी सी गुमटी पर चाय-नास्ता, और परचून की दुकान लगाते हैं। कुछ लोग पंचर बनाने, सुथारी का काम और गाड़ी ठीक करने का काम करते हैं । गाँव में लोगो को कोई रोजगार प्रशिक्षण नहीं मिला है । छोटा गाँव होने के कारण सुख-सुविधाओं की भी कमी है । गाँव के पहाड़ों में गाँव के ही लोगों के द्वारा चुनाई के पत्थरों का खनन किया जाता है । गाँव में जाने के लिए दो पक्के रास्ते हैं । बच्चों के लिए गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय है, जिसकी हालत ठीक नहीं है। विद्यालय में शिक्षकों की भी कमी है । कक्षा 6 से कक्षा 8 में पढ़ने के लिए बच्चे नारनिया और 9वीं से 12वीं के लिए दामडी जाते हैं । गाँव में लोगो में अशिक्षा बहुत ज्यादा है । लोग मात्र अपने नाम को लिख पाते हैं । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है, जो अच्छी हालत है, लेकिन वहाँ लोगो को शिकायत है कि मिलने वाला पोषाहर निम्न गुणवत्ता का है। पोषाहार में अक्सर चावल ही बनाया जाता है और बच्चों के खेलने और पढ़ने के लिए कोई माध्यम नहीं है । गाँव में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है। सामान्य

बिमारियों के ईलाज के लिए 5 किमी दूर दामडी जाना पड़ता है। गाँव में कोई दवाखाना नहीं है । बीमार जानवरों के ईलाज के लिए पशु हॉस्पिटल दोवडा में है। डॉक्टर बीमार पशु को देखने का ही 500 रूपए फ़ीस लेते हैं । गाँव में राशन की दुकान भी नहीं है। राशन लेने के लिए 5 किमी दूर दामडी जाना पड़ता है । गाँव में अब भी सामाजिक कुरीतियाँ बची हैं। बाल-विवाह, मौताना और बाल-श्रम जैसी बुराइयाँ अब भी प्रचलित हैं । बाल श्रम तभी होता है, जब बच्चे अपनी स्कूल की छुट्टियों में घर पर होते हैं। छुट्टियों के दौरान बच्चे कपास के खेतों में काम करने के लिए गुजरात चले जाते हैं ।

यातायात की सुविधा एवं स्थिति

बांदी घाटी गाँव जाने के लिए डूंगरपुर के बस स्टैंड से आसपुर जाने वाली बस से चितरेटी घाटी उतर कर तालाबफला से होते हुए जा सकते हैं। दूसरा रास्ता नरनिया में बस से उतर कर गाँव जाया जा सकता है । गाँव में 1 सी. सी. सड़क और 4 कच्ची सड़कें हैं । सीसी सड़क और कच्ची सड़क गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए है। इन रास्तों से घरों तक जाने के लिए मात्र पगडंड़िया ही बनी हैं, खेतों और पहाडियों से गुजरती है । गाँव की सड़क व्यवस्था अन्य गाँवो की भांति ही टूटी हुई और ऊबड़-खाबड़ है । इनकी देखभाल या मरम्मत नहीं की जाती है । गाँव में बस स्टैंड नहीं है। इसके लिए नरनिया आना होता है, जो गाँव से 3 किमी दूर है। यहाँ से ऑटो, जीप तथा निजी वाहन दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते हैं। गाँव के फलों में केवल नीजी वाहन (मोटर साइकिल) या पैदल जाया जाता है। खरीदारी के लिए बड़ा बाजार पुनाली 6 किमी दूर है और मुख्य बाजार डूंगरपुर 20 किमी दूर है। जहाँ पर सभी प्रकार की घरेलू खरीदारी के अलावा शादी-ब्याह और त्यौहारों की खरीदारी की जाती है।

पेयजल और सिंचाई की सुविधा

अन्य सुविधाओ की ही भाँति पेयजल की सुविधा का भी अभाव है। गाँव में पानी की सुविधा के लिए 1 तलावडी, 1 तालाब, 4 कुएं और 10 हैंडपंप हैं । गाँव के सभी कुएं गर्मी आने के पूर्व ही सूख जाते हैं । इससे पशुओं के पीने के लिए पानी और सिंचाई के लिए पानी का विकट संकट खड़ा हो जाता है। 10 में से 8 हैंडपंप चालू रहते हैं। चालू हैंडपंप में एक बार पानी आने के बाद 3-4 घंटे इंतजार के बाद चलाने पर पानी आता है । इनके पानी में भी फ्लोराइड पाया गया है, जिस कारण बीमारियाँ हो जाती हैं। जैसे हड्डियों का मुड़ जाना, दातों का पीलापन या जल्दी गिर जाना, त्वचा रोग या बालों की समस्या इत्यादि । गाँव में आर.ओ. प्लांट नहीं होने के कारण लोग फ्लोराइडयुक्त पानी पीने को मजबूर हैं।

गाँव में सिंचाई के कोई बड़े संसाधन नहीं हैं। गाँव में कोई नदी या नाला नहीं बहता है । 1 तालाब और 1 छोटी तलावडी है । लोगो के पास सिंचाई के लिए बोरवेल भी नहीं है । तालाब टूटा हुआ है। उसकी पाल कच्ची है। ग्रीष्म ऋतु से पहले ही तालाब और तलावडी में पानी सूख जाता है । गाँव के चारों कुएं गर्मी में सूख जाते हैं । गाँव का जल स्तर 200 फीट की गहराई में चला गया है । गर्मी में जल स्रोतों में

पानी का जलस्तर नीचे चला जाता है और इनमे पानी की कमी हो जाती है । हैंडपंप के पानी से पशुओं के लिए पानी का बंदोबस्त किया जाता है ।

कृषि, पशुपालन और रोजगार की स्थिति

गाँव का कुल रकबा 86 हेक्टेयर है। गाँव में कृषि योग्य जमीन बहुत कम है, क्योंकि गाँव में पहाड़ भी हैं । गाँव की कृषि जमीन ऊबड़-खाबड़ और पहाड़ी है। समतल नहीं होने से खेती करने में समस्या आती है । गाँव के लोग मक्का, उडद, तुअर, डागर, सरसों, मूंग और चना की खेती करते हैं । ऊबड़-खाबड़ जमीन और सिंचाई के पानी की कमी के चलते खाद्य उपज चार-पांच माह खाने तक की ही हो पाती है। पथरीली पहाड़ी होने के कारण ना तो ढंग से खेती हो पाती है, ना ही ट्रैक्टर से खेतों को जोत पाते हैं । गाँव के लोग बकरी, गाय और भैंस जैसे दुधारू पशु पालते हैं । पशुओं के लिए चारा गुजरात राज्य या उदयपुर जिले के गाँवो से खरीद कर लाना पड़ता है। चारे की एक पुली (गट्टर) 5 से 7 रुपये में पड़ जाता है। एक ट्रक भूसा या चारा 15000-18000 रुपये तक पड़ जाता है। इसे तीन-चार परिवार मिलकर खरीदते हैं । चारे और पौष्टिक आहार के अभाव में दुधारू पशु दूध भी बहुत कम देते हैं । जिससे घर के छोटे बच्चों की ही पूर्ति हो पाती है । चारे और पानी की कमी के कारण पशु बहुत दुबले-पतले हैं। रोजगार के नाम पर मनरेगा में मजदूरी और दिहाड़ी मजदूरी करते हैं । इसके अलावा लोग कडिया काम करने डूंगरपुर शहर जाते हैं । मनरेगा में भी 100 दिन काम नहीं मिल पाता है । मजदूरी भी 60-70 रूपए ही रोजाना मिलती है । आजीविका के अभाव में गाँव में 60 से 80 साल के बुजुर्ग भी मनरेगा में काम करने को मजबूर हैं।

शिक्षा व स्वास्थ्य

गाँव में 1 प्राथमिक विद्यालय है, जिसमे वर्तमान में 50 छात्र पढ़ते हैं। विद्यालय में 2 अध्यापक नियुक्त हैं । प्राथमिक स्कूल में सिर्फ 2 कक्षा कक्ष है। बाकी कक्षाओं के बच्चों को बाहर बिठाकर पढ़ाया जाता है और दो कक्षायें एक साथ बैठती हैं । विद्यालय के खेल का मैदान ऊबड़-खाबड़ है। परकोटा भी नहीं बना है। स्कूल के शौचालय टूटे हुए हैं और उनमें पानी की सुविधा नहीं है । छात्र-छात्राओं के लिए पीने के स्वच्छ पेयजल की सुविधा नहीं है । बच्चों को हैंडपंप का फ्लोराइड वाला पानी पीना पड़ता है । कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की पढाई के लिए बच्चों को नरनिया जाना पड़ता है। 9वीं से 12वीं कक्षा की पढ़ाई के लिए 5 किलोमीटर दूर दामडी जाना पड़ता है । स्नातकस्तरीय पढ़ाई के लिए 20 किमी दूर डूंगरपुर शहर में जाना पड़ता है। अधिकतर बच्चे कॉलेज के पास ही किराये पर कमरा लेकर या हॉस्टल में रहते हैं । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है, जिसकी हालत अच्छी है, लेकिन बच्चों के पढ़ने और खेलने की पर्याप्त सुविधा नहीं है।

गाँव में उप-स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है। सरकारी हॉस्पीटल पंचायत के मुख्य गाँव दामडी में है, जो गाँव से 5 किमी दूर है । बडा हॉस्पीटल 20 किमी दूर डूंगरपुर में है। पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल दोवडा में है ।

बादीघाटी की चिन्हित समस्याओं का विवरण निम्न प्रकार है-

प्राकृतिक संसाधन

वर्तमान में गाँव में जंगल की जमीन नहीं बची है। आज से 30-40 साल पहले गाँव के जंगल में आम, महुआ, बांस, सागवान और इमारती जलाऊ लकड़ी के पेड़ बहुतायत में हुआ करते थे, लेकिन जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गयी, वैसे-वैसे ही लोगो ने जमीन को अपने कब्जे में करने के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करना शुरू कर दिया । प्राकृतिक संसाधनों के नष्ट होने और जंगल के कटने से बारिश की अनियमितता बढ़ गयी । अक्सर मानसून समय पर नहीं आता है। कभी-कभी अतिवृष्टि या कभी-कभी खण्ड बारिश होती है । जंगल कट जाने से बारिश कम होती है और बारिश कम होने से जंगल नहीं उगाया जा सकता है । नए पेड़ लगाने और उनके संरक्षण के प्रति उदासीनता के कारण जंगल से मिलने वाली आय भी नहीं हो पा रही है। जैसे - आम, सागवान, गोद को बेच कर आय करना । गाँव के लोग भी इस समस्या को लेकर गंभीर नहीं है। वे इसे बड़ा मुद्दा मानने के बजाय इसके संरक्षण को सरकार के भरोसे पर छोड़ रहे हैं । गाँव में चारागाह की जमीन भी नहीं है। गाँव की बड़ी पहाडियों पर गाँव के लोगो के द्वारा चुनाई के पत्थरों का खनन हो रहा है । जिसे ये अपने काम में लेने के बाद बाहर के ठेकेदार को बेच देते हैं ।

भूमि, कृषि और खाद्यान्न की समस्या

गाँव का कुल रकबा 86 हेक्टेयर ही है। उसमें लोगों के पास खेती और मकान बनाने की जमीन बहुत कम है । गाँव में लोगों को उनके कब्जे की जमीन का खातेदारी हक नहीं मिला है। वे यहाँ अपने पूर्वजों के समय से बसे हुए हैं और खेती कर रहे हैं । कुछ लोगों ने अपनी जमीन के पट्टे और नियमन के लिए दावा फाइल लगाई थी, किन्तु पैरवी के अभाव में फाइल विभाग से गायब हो गयी । अब लोगों को धीरे-धीरे अपनी जमीन के सरकार के कब्जे में चले जाने का डर सताने लगा है । गाँव में कृषि जमीन भी कम ही है। कृषि भूमि के ऊबड़-खाबड़ होने के कारण समतलीकरण की आवश्यकता है। सिंचाई के लिए पानी की सुविधा भी नहीं है । खेत पहाडियों पर हैं, जहाँ खेतों को जोतने के लिए बैल ही एकमात्र सहारा हैं। रास्ता न होने और सीधी पहाड़ी होने के कारण ट्रेक्टर से खेतों को नहीं जोता जा सकता है ।

बांदी घाटी गाँव में सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति बारिश के मौसम में ही हो पाती है। इस कारण मुख्य फसल बारिश में ही होती है । गर्मी के मौसम में पानी की कमी हो जाती है। सिंचाई का कोई भी

साधन ऐसा नहीं है, जो साल भर पानी उपलब्ध करा पाए और लोगो के पास बोरवेल भी नहीं है । गाँव के चारों कुएं बेकार स्थिति में हैं। बारिश के 2 माह बाद ही उनमें पानी खत्म हो जाता है । ग्रीष्म ऋतु में खेतों में पानी के अभाव में कोई फसल नहीं होती है । गाँव में भू-जलस्तर 200 फीट से भी नीचे चला गया है। जल संरक्षण के प्रति उदासीनता और जल स्तर का ऐसे ही नीचे जाना बरक़रार रहा तो आगामी कुछ वर्षों में गाँव के विस्थापन की स्थिति भी आ सकती है । कृषि जमीन ऊबड़-खाबड़ है, जिस पर खेती मुश्किल से हो पाती है । गाँव में पानी की व्यवस्था के लिये 1 तालाब, 1 तलावडी है, जो गर्मी के मौसम में सूख जाते हैं। गाँव में खाने में मुख्यतः मक्का उपयोग में आता है। इसके अलावा तुअर, चने की खेती की जाती है । खेती में उपजा अनाज साल के 4 माह ही चल पाता है। इसके पश्चात खाने के लिए राशन की आपूर्ति का विकल्प सरकारी गेहूँ या बाजार से खरीदा गया अनाज है। सरकारी उचित मूल्य की दुकान दामड़ी में 5 किमी दूर है। राशन की दुकान पर गेहूं मिलता है। चीनी तथा केरोसीन त्यौहारों पर ही मिलता है।

जल प्रबंधन की कमी

गाँव में पानी की सुविधा के लिए 4 कुएं, 1 तलावडी और 1 तालाब है लेकिन गहराई कम होने और रिसाव के कारण तालाब में साल भर पानी नहीं रहता है। गाँव में चारों कुएं गर्मी आने से पूर्व ही सूख जाते हैं । तलावडी से गर्मी के मौसम से पहले तक के लिए पशुओ के पीने के पानी का बंदोबस्त हो जाता है । गाँव में सभी खेत असिंचित हैं । खेतों में सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण उनमें केवल बारिश के पानी से ही फसल की पैदावार हो पाती है। बारिश के पानी को रोकने के लिये गाँव में कोई प्रबंधन नहीं है। जिस कारण गर्मियों के मौसम में भूमिगत पानी की कमी हो जाती है । गाँव में पानी का स्तर 200 फीट से नीचे है। पेयजल की व्यवस्था के लिए गाँव में 10 हैंडपंप हैं, जिसमें से 8 हैंडपंप ही गर्मी के मौसम में चालू रहते हैं। गाँव में शुद्ध पेयजल के लिए कोई आर. ओ. प्लांट नहीं लगा है । वर्षा जल को संरक्षित करने के विषय की ओर हाल-फिलहाल गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है। गर्मी में ना तो पीने को पानी मिल पाता है, ना ही सिंचाई का पानी मिल पाता है।

पशुपालन संबंधित समस्या

बांदी घाटी में प्रमुखतया गाय, बैल, भैंस व बकरी पाली जाती है। गाँव में चारागाह नही है। ना ही लोगों के पास इतनी प्रर्याप्त जमीन है कि वे अपने खेतों में फसल के साथ-साथ चारा भी उगा लें । पशुओं के पीने के लिए पानी की भी व्यवस्था हैंडपंप चला कर की जाती है । पौष्टिक और भरपूर चारे के अभाव में दुधारू पशु अत्यधिक कमजोर हैं। कमजोर होने के कारण दुधारू पशुओं से इतना ही दूध हो पाता है कि घर के छोटे बच्चों का काम चल जाये । दूध के अभाव में लोग काली चाय बना कर ही पीते हैं । पहाड़ों

पर पत्थर बहुत ज्यादा हैं, जिस कारण चारा भी नहीं होता है । जो भी चारा बारिश के दौरान में होता है, वह केवल तीन-चार माह ही चल पाता है। उसके पश्चात चारा खरीद कर लाना पडता है। चारे की एक पुली या गट्ठर सात रूपये में खरीदते हैं या फिर 4-5 परिवार वाले मिल कर 15000 से 17000 रूपये में भूसे का ट्रक खरीदते हैं।

आवागमन की समस्या

गाँव में कुल 2 पक्की सड़के हैं । गाँव के अन्दर सिर्फ 1 सी.सी. सड़क है। वो भी इतनी ज्यादा टूट गयी है कि उसमे से गिट्टी निकल गयी है और गड्ढे पड़ गये हैं । गाँव में जाने वाली दोनों सड़कों को बनाने के बाद से उनकी सुध नहीं ली गयी है । पक्की सड़क इतनी ज्यादा टूट गयी है कि उस पर पैदल या दो-पहिया वाहन चलाना भी मुश्किल होता है । गाँव के भीतरी फलों में जाने के लिए 4 कच्ची सड़क हैं। बाकी सभी घरों में जाने के लिए पगडण्ड़िया ही हैं। सी.सी. सड़कों की कमी है । कच्ची सड़कों और पगडण्डियों पर धूल उड़ने की समस्या आम है। साथ ही बारिश में कच्ची सड़कें कीचड़ से भर जाती हैं। जिस कारण आने-जाने में समस्या रहती है । गाँव के लोग सड़क की समस्या से सबसे अधिक प्रभावित रहते हैं। बीमार लोगो और गर्भवती महिलाओ को समय पर हॉस्पिटल नहीं पहुँचा पाते हैं। खड्डों की वजह से अक्सर दुर्घटना की आशंका रहती है। गाँव के फलों में केवल नीजी वाहन जैसे मोटरसाइकिल या पैदल जाया जाता है। गाँव में जाने के लिए रात में काफी जोखिम रहता है ।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर

बांदी घाटी में 1 प्राथमिक स्कूल है, जिसमे 50 बच्चों का नामांकन हुआ है। विद्यालय में मात्र 2 अध्यापक नियुक्त हैं । प्राथमिक स्कूल में सिर्फ 2 कक्षा कक्ष हैं और 1 ऑफिस का कमरा है । कमरे कम होने के कारण दो कक्षायें एक साथ बैठ कर पढ़ती हैं या बच्चों को बाहर बिठाकर पढ़ाया जाता है । दोनों कमरे भी जर्जर हालत में है । जिससे पढाई के दौरान हादसे का डर बना रहता है । खेल के मैदान तथा शौचालय की हालत भी अच्छी नहीं है । पढाई अच्छी ना होने के कारण गाँव के बच्चों का सीखने और ज्ञान का स्तर भी काफी निम्न है । शौचालय में पानी की सुविधा नहीं है और न ही सफाई रहती है । छात्र-छात्राओ के लिए पीने के स्वच्छ पेयजल की सुविधा नहीं है । बच्चों को हैंडपंप का फ्लोराइड वाला पानी पीना पड़ता है । बच्चे पैदल चल कर 3 किमी दूर नरनिया में माध्यमिक स्कूल और 5 किमी दूर दामडी में 12वीं की स्कूल में जाते हैं । उच्च शिक्षा के लिये डूंगरपुर शहर जाना पड़ता है । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है। वहाँ मिलने वाले पोषाहार की ख़राब गुणवत्ता को लेकर क्षेत्रवासियों में शिकायत है और बच्चों के अक्षर ज्ञान एवं खेलने की कोई सुविधा नहीं है ।

गाँव में सामान्य बिमारियों जैसे सर्दी, जुकाम, खासी या चोट लगने पर मरहम-पट्टी और दवा के लिए कोई उप-स्वास्थ्य केन्द्र या दवाखाना नहीं है। इसके लिए 5 किमी दूर दामडी जाना पड़ता है । बीमार जानवरों के इलाज के लिए पशु हॉस्पिटल दोवडा में है। अधिक खर्च लगने के कारण लोग अपने बीमार जानवरों को पशु अस्पताल नहीं ले जाते हैं। डॉक्टर को ही गाँव में बुलाते हैं। डॉक्टर बीमार पशु को देखने की 500 रूपए फ़ीस लेता है ।

आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी

रोजगार की स्थिति खराब है। गाँव में लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए खेती करते हैं। इसके साथ-साथ मनरेगा में मिलने वाले काम करते हैं। मनरेगा में न तो 100 दिन काम मिलता है और न ही पूरी मजदूरी । गाँव के युवा जो थोड़ा बहुत पढ़ना-लिखना जानते हैं, वे उदयपुर जिले में किसी फैक्ट्री में काम करते हैं या गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत, मोडासा या महानगर मुंबई में मजदूरी करने के लिये जाते है। गाँव में मनरेगा के तहत काम मिलता है। जिसमें गाँव की सभी महिलायें जाती हैं। कुछ पुरुष भी मनरेगा में काम पर जाते हैं। वर्तमान में मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है, वह भी 70 रूपये तक ही दी जाती है। मनरेगा में काम भी 50-55 दिन के लिए ही मिलता है ।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-

संसाधन	हालत	सम्भावना
जल तालाब तलावडी कुआं हैंडपंप	गाँव में कोई नदी, नाला नहीं है । बरसात के पानी को रोकने के लिए एनिकट या चेकडैम भी नहीं है, ताकि बारिश के पानी को रोक कर जमीनी जल स्तर को बढ़ाया जा सके । बारिश का पानी बह कर निकल जाता है । तालाब में भी पानी बारिश तक ही रहता है क्योंकि तालाब की पाल कच्ची है। इसके अलावा तलावडी की भी यही हालत है । गाँव में 4 कुएं और 10 हैंडपंप हैं, लेकिन सभी कुएं गर्मी में सूखे जाते हैं। 2 हैंडपंप में पानी नहीं आता है। जो 8 हैंडपंप चालू हैं, उनका पानी भी फ्लोराइड युक्त है। गाँव में सिंचाई और मवेशियों के पानी के लिये कोई स्थाई व्यवस्था नहीं है। पशुओं	तालाब की सफाई करके उसे गहरा किया जाये तो पानी ज्यादा समय तक रहेगा और मछलीपालन से लोगो को आय भी मिल सकती है । गाँव में बारिश के पानी को रोकने के लिए और भूमिगत जल स्तर को ऊँचा उठाने के लिए अच्छे बहाव और भराव वाले स्थान पर बड़ा गहरा तालाब बनाया जाये । तलावडी की सफाई और पाल बनाना ताकी पानी बह कर न निकले और साल भर पशुओं के पीने के पानी का बंदोबस्त हो जाये । कुओं को गहरा किया जाये और बंद हैंडपंप की मरम्मत करके गहरे करना ताकि पीने के पानी की समस्या से निजात मिले । छोटे-छोटे चेकडैम बनाये जाये तो पानी ज्यादा

	को हैंडपंप पर ही ले जाकर पानी पिलाया जाता है । गर्मी में मवेशियों के पीने के पानी की समस्या हो जाती है।	इकठ्ठा होगा और खेतों में मिट्टी का कटाव भी नहीं होगा । खेतों में पानी की सुविधा अच्छी हो सकती है । दूषित पानी के प्रभाव से बचाव के लिए कुछ जगहों पर आर.ओ. प्लांट लगाने चाहिए ।
जमीन कृषि भूमि बिला नाम भूमि पहाड़	खेती की जमीन ऊबड़-खाबड़, पहाडियों की ढलान वाली, पथरीली और असमतल है। पानी की कमी के कारण खेती की सम्भावना केवल बारिश के मौसम में होती है । गाँव की बिलानाम जमीन और चारागाह भूमि पर गाँव वालों ने कब्ज़ा कर रखा है । 15 से 20 प्रतिशत जमीन पर घर बने हुए हैं । आवासीय जमीन के पट्टे नहीं मिले हैं । गाँव के पहाड़ों में गाँव के ही लोगो के द्वारा चुनाई के लिए पत्थरों का खनन किया जा रहा है ।	गाँव सभा के द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत अपना काम योजना के तहत ऊबड़-खाबड़ जमीनों को समतलीकरण करके उसे उपजाऊ बनाया जा सकता है। पहाड़ी खेतों को सीढ़ीनुमा काटकर खेती की जा सकती है। इससे पैदावार बढ़ने के साथ मिट्टी का कटाव भी कम होगा । खाली जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करके गाँव को कमाई का स्रोत मिल सकता है । यदि गाँव सभा पहाड़ों से पत्थरों के खनन को कब्जे में ले ले तो गाँव को आय मिल सकती है ।
सड़क पक्की सड़क सी.सी. सड़क कच्ची सड़क	गाँव में जाने के लिए सीमा पर 2 पक्की सड़कें और गाँव के भीतर 1 सी.सी. सड़क है, जो बहुत ही ज्यादा टूट गयी है। इन सडकों पर पैदल या दो-पहिया वाहन की मदद से ही आवागमन किया जा सकता है । सी.सी. सड़क में गड्ढे पड़ गये हैं, जिसके कारण हादसों की सम्भावना बनी रहती है। गाँव में जाने के लिए 4 कच्चे रास्ते भी हैं जो कि काफी ज्यादा ख़राब हालत में हैं । गाँव में आने-जाने के लिए साधन नहीं मिल पाते हैं । पहाड़ी जमीन होने के कारण सड़क बनाने में समस्या आ रही है । सडकों की कमी के कारण दूसरे गाँवो में जाने के लिए भी समस्या होती है ।	यदि गाँव के सभी कच्चे रास्ते सी.सी. सड़क में बदले जाये और सी.सी. सड़कों को चौड़ा करके पुनः बनाया जाये तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी। गाँव की पक्की सड़कों को पंचायत के एक्शन पालन में वरीयता से देकर नये सिरे से बनवाना ।
प्राथमिक स्कूल	गाँव में 1 प्राथमिक स्कूल है, जिसमें अध्यापकों की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पा रही है। बच्चों का	स्कूल में नए कमरे बनाये जाये और पूरे अध्यापक नियुक्त किये जाये । फर्श के गड्ढों को भरवाया जाये और बैठने के

	नामांकन भी कम होता है । अभी सिर्फ 2 अध्यापक नियुक्त हैं और कक्षा कक्ष भी कम हैं । दिए जाने वाले ज्ञान का स्तर भी निम्न है । कमरों की कमी के कारण दो कक्षायें एक साथ बैठ कर पढ़ती हैं । स्कूल में खेल के मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । पीने के पानी की उचित एवं साफ़ व्यवस्था भी नहीं है । स्कूल की फर्श में गड्ढे पड़ गये हैं, जिस कारण बच्चों को बैठने में दिक्कत होती है ।	लिए दरी दी जाये । इसके अलावा स्कूल के शौचालय की भी मरम्मत करवाई जाये और उनमे पानी की व्यवस्था की जाये । पीने के पानी के लिए आर.ओ. का प्रबन्ध किया जाये । गाँव सभा के द्वारा प्रस्ताव लेकर शिक्षा विभाग को अध्यापकों की नियुक्ति के लिए ज्ञापन दिया जाये ।

गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता

क्र. सं.	**समस्याएं**	**सार्वजनिक/ व्यक्तिगत**	**कारण**	**समाधान**	**तात्कालिक/ दीर्घकालिक**
1	**कृषि संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत / सार्वजनिक**	गाँव की कृषि भूमि ऊबड़-खाबड़ है। खेतों में सिंचाई की सुविधा भी नहीं है। सिंचाई के लिए बरसात के पानी के संग्रहण की कोई योजना नहीं है । खेतों में खेत तलावडिया नहीं है । एकमात्र तालाब भी कम गहराई होने के कारण जल्दी सूख जाता है । भू-जलस्तर 200 फीट नीचे चला गया है । उन्नतशील बीज का अभाव होने से उत्पादन प्रभावित होता है । मिट्टी की जाँच नहीं होना, अधिक रासायनिक खाद उपयोग में लेने के कारण मिट्टी की उर्वरता	खेतों को गाँव सभा द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत-अपना काम योजना के अंतर्गत समतलीकरण, बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों की मेड़ बंदी तथा कच्चे चेकडैम का निर्माण। घर और खेतों में पानी को रोकने के लिए टाके (पक्के खड्डे) बनवाना । गाँव में पक्का तालाब बनाकर बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊँचा किया जा सकता है। भू-जलस्तर एकदम से नीचे न जाये इसके लिए जल-संरक्षण योजनाओं और माध्यमो को अपनाना ।	**तात्कालिक**

			खत्म होना ।		
2	**शिक्षा सम्बंधित समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या अध्यापकों की कमी है । जो अध्यापक अभी कार्यरत हैं, वे भी समय पर नहीं आते हैं । स्कूल में खेल के मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । बच्चों को पढ़ाने के लिए कक्षा कमरों की कमी है । पीने के पानी के लिए टंकी और शुद्ध जल की उचित व्यवस्था नही है ।	गाँव में प्राथमिक स्कूल में अध्यापकों की संख्या बढ़ायी जाये और वहाँ तक जाने के लिए सी.सी. सड़क बनायी जाये । बिजली पानी की व्यवस्था दी जाये । अध्यापको को समय पर आने के लिए पाबंद किया जाना चाहिये । पुराने कमरे मरम्मत किये जाये और नए कमरे बनाये जाये । शिक्षा को रुचिकर बनाने के लिए खेल के माध्यम से सिखाया जाये ताकि किताबी ज्ञान के साथ प्रैक्टिकल ज्ञान मिल पाए ।	**तात्कालिक**
3	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में 4 कुएं और 10 हैंडपंप हैं लेकिन सभी कुएं सूखे हैं और 2 हैंडपंप भी बंद हैं । चालू हैंडपंप का पानी भी फ्लोराइड युक्त है। हैंडपंप की खुदाई बारिश के मौसम में की जाती है, जिससे कम गहराई में ही पानी मिल जाता है । जो तय गहराई है, उससे कम खुदाई होती है । गाँव का जलस्तर 200 फीट से नीचे चला गया है। लोगों के पास बोरवेल की सुविधा भी नहीं है, जिससे सिंचाई के लिए पानी भी नहीं मिल	नये कुएं खुदवाना और बंद कुओं को गहरा करवाना । जो हैंडपंप बंद हो गये हैं, जिनमें पानी कम आने लगा है, उन्हें गहरा करवाना और शुद्ध पानी की आपूर्ति के लिए गाँव में आर.ओ.प्लांट लगवाना ताकि फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए । कच्चे-पक्के चेकडैम निर्माण करना । जिससे गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊँचा किया जा सकता है। पशुओं के लिए तालाब का निर्माण करवाना ।	**दीर्घकालिक**

			पाता है । बारिश के पानी को रोकने के लिए कोई योजना लोगों के पास नहीं है । हालत यह है कि हैंडपंप से यदि एक बार पानी मिल जाये तो तो अगले दो घंटे तक पानी नहीं आता है ।		
4	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में सिर्फ 2 पक्की सड़क और 1 सी.सी. सड़क है । पक्की सड़क टूट गयी है, जिससे वाहन चालकों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है । कई बार गाड़ियाँ फिसल जाती हैं और लोग चोटग्रस्त हो जाते हैं । पंचायत द्वारा जो मनरेगा में सड़के बनाई जाती हैं, वे भी अच्छी नहीं होतीं। कच्ची सड़के जहाँ पहले से हैं, वहीं पर दुबारा बना दी जाती हैं । सबसे ज्यादा समस्या उन घरों की है जो गाँव के अंदरूनी हिस्से में पड़ते हैं। जहाँ सड़कें कच्ची हैं और बारिश में मिट्टी कीचड़ में बदल जाती है । सी.सी. सड़क और पक्की सड़क टूट गयी हैं।	गाँव सभा कमेटी के गठन के बाद जहाँ-जहाँ रास्ते नहीं हैं, वहाँ के प्रस्ताव लिए गए हैं और सी.सी.सड़क मरम्मत करना और कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना । नई पक्की सड़क बनाना ।	**तात्कालिक**
5	**सरकारी योजनाओं का सही**	**व्यक्तिगत**	गाँव में आवास योजना में अभी भी कई लोगों का मकान नहीं बना है।	गाँव के सबसे जरूरतमंद लोगों को आवास निर्माण हेतु आवेदन कराना और	**तात्कालिक**

	क्रियान्विति ना होना - आवास निर्माण, पेंशन और उसके भुगतान संबधी समस्या		उनका नाम लाभान्वितों की सूची में नहीं है और जिन लोगों के आवास बन भी गए हैं, उनमें से ज्यादातर लोगों को दूसरी या तीसरी क़िस्त का भुगतान नहीं हुआ है। जो सक्षम लोग हैं, उनके आवास बन गए हैं । पेंशन में समस्या यह है कि गाँव में सरकारी कागजातों में उम्र अलग-अलग होने से भी लोगों की पेंशन बंद है। इन योजनाओं में भ्रष्टाचार बहुत ज्यादा हो गया है। राशि के भुगतान के लिए भी कमीशन की माँग की जाती है ।	उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है, उनको पेंशन योजना से जोड़ना। बंद पेंशन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना।	
6	**रोजगार**	**सार्वजनिक**	खेती के अलावा मनरेगा ही रोजगार का एकमात्र साधन है, जिससे घर का गुजारा होता है । इसके अलावा कई लोग गाँव से बाहर जाकर कडिया काम, मजदूरी करते हैं ।	लोगों को मनरेगा में सभी दिन काम और पूरी मजदूरी दी जाये और लघु गृह-उद्योग प्रशिक्षण दिए जाये ।	

संसाधन आकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths **शक्तियां**	**W- Weakness** **कमजोरी**	**O- Opportunities** **अवसर**	**T- Threats** **चुनौतियां**
आवागमन पक्की सड़क सी. सी. सड़क कच्ची सड़क मजदूर मनरेगा	टूटी सड़कों की सही समय पर मरम्मत न होना। पंचायत का सड़क निर्माण व मरम्मत को लेकर उदासीन होना। भ्रष्टाचार का व्याप्त होना। मानदेय अनुसार व सही समय पर मजदूरी न मिलना।	मनरेगा के तहत टूटी सड़क की मरम्मत व पगडंडी को चौड़ा करना व कच्चे रास्ते का निर्माण किया जा सकता है। ऊबड़-खाबड़ जमीन का समतलीकरण रास्ता निर्माण किया जा सकता है। कच्ची सड़क को सीसी सड़क बनाया जा सकता है।	पंचायत व मेट के भ्रष्टाचार को रोकना। गाँव सभा को मजबूत करना। गाँव सभा द्वारा उपयोगिता प्रमाण पत्र देना। निगरानी समिति द्वारा निर्माण कार्य की निगरानी करना।
जल कुएं हैंडपंप नाले नदी तालाब एनिकट बोरवेल	बारिश का पानी संग्रहित करने की किसी भी योजना का न होना। एनिकट, नाले, कुओं, हैंडपंप में पानी सूख जाना।	मनरेगा के तहत तालाब, कुएं, एनिकट निर्माण व मरम्मत का कार्य किया जा सकता है। बोरवेल पर नियंत्रण के नियम बनाये जा सकते हैं। बारिश का पानी रोकने की योजना बनाई जा सकती है। कुएं, हैंडपंप में पानी रीचार्ज किया जा सकता है। तालाब निर्माण किया जा सकता है।	पंचायत को जल संग्रहण के प्रति जागरूक करना। लोगों के बीच बारिश के पानी को इकठ्ठा करने की जागरूकता पैदा करना।
आजीविका संर्वधन कृषि भूमि चारागाह	कृषि भूमि का अधिकतर पथरीली व ऊबड़-खाबड़ होना।	भूमि समतलीकरण व भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है।	मनरेगा को मूल रूप में लागू करवाना। रोजगार की समस्या पर

मजदूरी मनरेगा सब्जी की खेती पशुपालन	सभी लोगों के पास पर्याप्त भूमि का न होना। पशुओं के लिए पर्याप्त चारा न होना। मनरेगा के प्रति लोगों का उदासीन होना। सिंचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध न होना।	चारागाह जमीन का विकास कर चारा उगाया जा सकता है। छोटे पशु जैसे भेड़, बकरी, मुर्गी या मधुमक्खी पालन किया जा सकता है। एनिकट, तालाब में मछलीपालन किया जा सकता है। सब्जी की खेती की जा सकती है। मनरेगा के कार्यों की सामूहिक योजना बनाई जा सकती है।	गाँव सभा में चर्चा करना। पंचायत व मेट के भ्रष्टाचार को रोकना। गाँव सभा को मजबूत करना।
भूमि बिलानाम जमीन वन जमीन गौण खनिज	बिलानाम भूमि अधिकार पत्र न मिलना। गाँव सभा द्वारा गौण खनिज निकालने की योजना नहीं बनाना।	बिलानाम भूमि के पट्टे के माँग की योजना बनाई जा सकती है। बाहरी व्यक्ति या कंपनी द्वारा खनिज निकालने पर गाँव सभा टैक्स लगा सकती है।	बिलानाम भूमि सामूहिक माँग की योजना बनाना। गाँव सभा को मजबूत करना।

गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव का नजरिया नक्शा-

गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यों का विवरण -

क्र सं	प्रस्तावित कार्य	संख्या
1	**पेंशन के संबंध में**	
	विधवा पेंशन	1
	विकलांग पेंशन	3
	पालनहार 0 से 5 वर्ष	0
	6 से 18 वर्ष	3
2	**पीएम आवास के संबंध में**	20
3	**चौराहा निर्माण के संबंध में** रा.प्रा.वि. के पास व ऐकलाग माताजी के पास चौराहा निर्माण	2
4	**विद्यालय के संबंध में**	3

	राजकीय प्राथमिक विद्यालय की छत मरम्मत कक्षा कक्ष का निर्माण खेल मैदान का समतलीकरण	
5	**राशन की दुकान के संबंध में**	1
6	**सामुदायिक भवन के संबंध में** ऐकलाग माताजी के पास सामुदायिक भवन निर्माण	1
7	**रास्ता निर्माण के संबंध में** कच्ची सड़क (ग्रेवल) सी.सी. सड़क	 4 5
8	**तालाब गहरीकरण / मरम्मत / निर्माण के संबंध में** बांदी घाटी तालाब मोटा बदड़ा	2
9	**हैंडपंप के संबंध में** नए हैंडपंप	 4
10	**<u>केटेगरी 4 के कार्य</u>** खेत समतलीकरण व मेड़बंदी, रिंगवाल, नया कुआं / कुआं गहरीकरण / मरम्मत एवं पशुबाड़ा निर्माण, खेत तलावडी	34
11	**<u>चेक</u> डैम निर्माण के संबंध में**	17
<u>12</u>	**<u>एनिकट</u> निर्माण के संबंध में**	4
13	**काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा के संबंध में**	1
14	**आपसी विवाद निपटारा के संबंध में**	1
15	**सामाजिक कुरीतियों पर रोक के संबंध में** बाल श्रम बाल विवाह डायन प्रथा मौताणा	1
16	**श्मशान घाट के संबंध में** टीन शेड निर्माण चबूतरा निर्माण परकोटा निर्माण	3
17	**सार्वजनिक कुआं निर्माण**	1
18	**पनघट योजना में आर.ओ. प्लांट का निर्माण**	1

गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया-

सेवा में ,

श्रीमान सरपंच/सचिव महोदय,
ग्राम पंचायत ......दोवड़ा..........

विषय :- गाँव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्पित करना चाहते हैं, इस अधिनियम के तहत संविधान में पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रों पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगों ने अपने इस रहवास को औपचारिक तौर पर गाँव के रूप में स्वीकार किया है और पंचायत उपबंध अधिनियम 1999 की धारा 3(क) के तहत ग्राम सभा का गठन किया है। इसके अनुसार धारा 3(ग)(I) के तहत ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गाँव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है। हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न है) पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर में पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय
ग्राम सभा सदस्यगण
ग्राम ..कांदीघाटी

प्रतिलिपि :-
1. श्रीमान विकास अधिकारी ......दोवड़ा.......
2. श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय ...डूंगरपुर
3. श्रीमान मुख्य कार्यकारी अधिकारी ...डूंगरपुर
4. निजी रिकॉर्ड

अध्यक्ष
गांव गणराज्य ... कांदीघाटी
ग्राम पंचायत ... सचिव
पं.स. दोवड़ा जि. डूंगरपुर (राज.)

22-5-19

Scanned with CamScanner

प्रस्ताव कवरिंग

Date: / / Page no: 1

पेसा कानुन 1996 राजस्थान सरकार के अधिनियम 1999 व नियम 2011 के अन्तर्गत आज दिनांक 8/5/2019 को गाँव बादी घाटी गाँव की गाँव सभा की बैठक डी.पी. चौक पर आयोजित की गई गाँव सभा मे मौजुद गाँव वासियों ने कमला जी. जीवराज को अध्यक्ष चुना जिनकी अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही की गयी गाँव सभा को बैठक मे निम्न लिखित प्रस्तावो पर चर्चा की गयी उनका अनुमोदन किया गया।

एजेण्डा

1. पेंशन के सम्बन्ध में (वृद्ध, विधवा, विकलांग पालनहार एकलनारी पेंशन
(2) P.m. / cm. आवास के सम्बन्ध में विचार
(3) ~~[illegible]~~ चौराहे के सम्बन्ध में विचार
(4) स्कुल के सम्बन्ध में विचार
~~(5) स्कुल के सम्बन्ध में विचार~~
(5) राशन की दुकान के सम्बन्ध में विचार
(6) सामुदायिक भवन के सम्बन्ध में विचार
(7) रास्ता निर्माण के सम्बन्ध में विचार
(8) तालाब गहरीकरण / मरम्मत के सम्बन्ध में विचार
(9) नए हैंडपम्प लगाने और पुराने की मरम्मत के सम्बन्ध में
(10) केटेगरी 4. के कार्य = खेत समतलीकरण, मेडबन्दी, पशुवाड़ा निर्माण खेत तलावड़ी, कुंआ निर्माण, गहरीकरण / मरम्मत के सम्बन्ध में
(11) चेकडम निर्माण के सम्बन्ध में विचार
(12) एनीकट निर्माण / मरम्मत के सम्बन्ध मे विचार
(13) वृक्षारोपण के सम्बन्ध में (14) काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा के सम्बन्ध
(15) गाँव के आपसी विवाद गाँव सभा मे निपटाने के सम्बन्ध में (16) सामाजिक कुरीतिया, बाल विवाह, बालश्रम डायन प्रथा मौताणा प्रथा पर रोक
(17) शमशान घाट के सम्बन्ध (20) सार्वजनिक कुआ निर्माण
(18) श्रमिक कार्ड के सम्बन्ध मे (21) पनघट योजना
(19) मनरेगा में पुरे 100 दिन काम मिले पुरी मजदुरी मिले समय से भुगतान हो आवेदन की रसीद के सम्बन्ध में

Scanned with CamScanner

प्रस्ताव प्रथम पृष्ठ

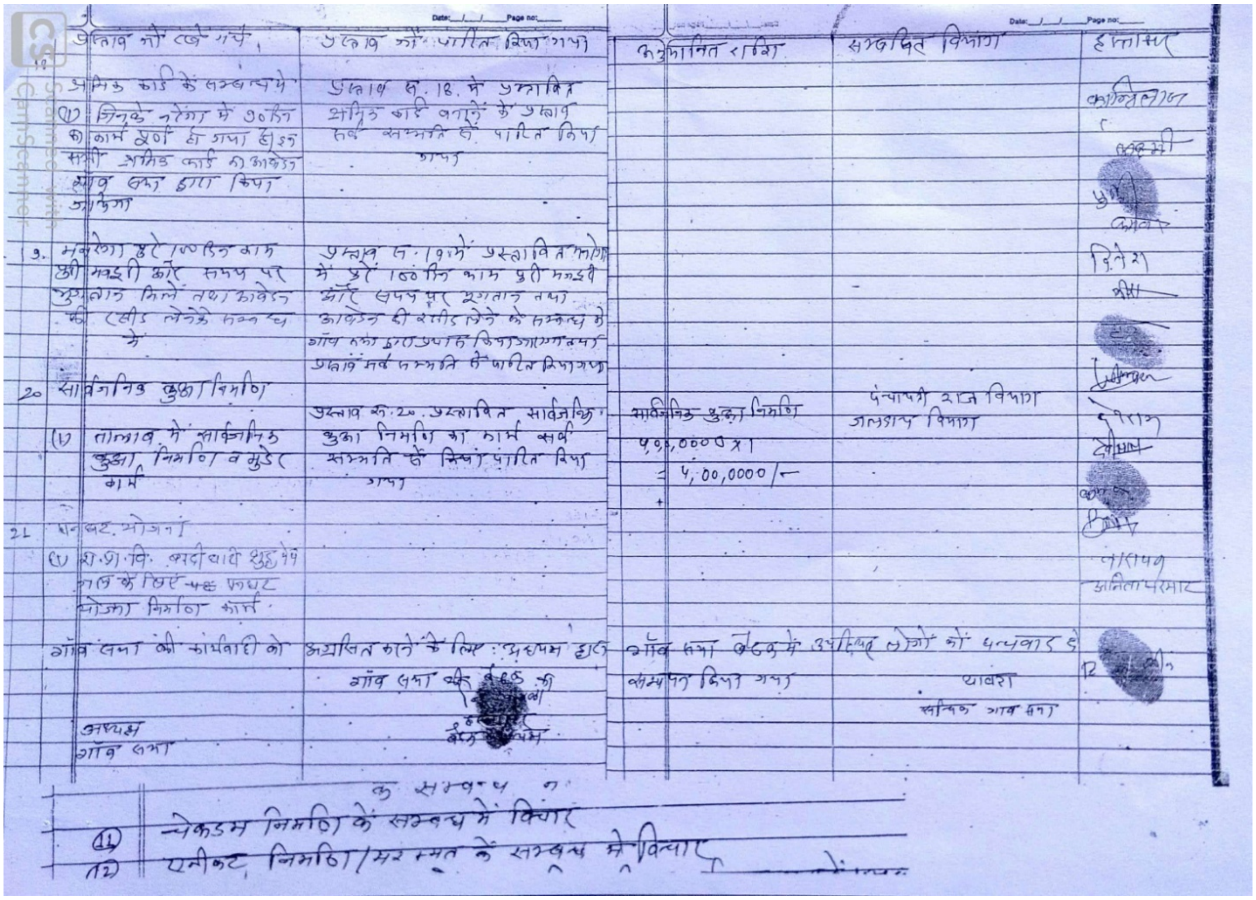

क्र.	प्रस्ताव जो रखे गये	प्रस्ताव जो पारित किया गया	अनुमानित राशि	सम्बन्धित विभाग	हस्ताक्षर
18	श्रमिक कार्ड के सम्बन्ध मे (1) जिनके नरेगा मे 90 दिन का कार्य पूर्ण हो गया है उन सभी श्रमिक कार्ड का आवेदन गाँव सभा द्वारा किया जायेगा	प्रस्ताव क्र. 18. मे प्रस्तावित श्रमिक कार्ड बनाने के प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया			
19.	मनरेगा में 100 दिन काम की मजदूरी और समय पर भुगतान मिले तथा आवेदन की रसीद लेनेके सम्बन्ध मे	प्रस्ताव क्र. 19 में प्रस्तावित मनरेगा में पूरे 100 दिन काम पूरी मजदूरी और समय पर भुगतान तथा आवेदन की रसीद लेने के सम्बन्ध मे गाँव सभा द्वारा प्रस्तावित किया गया तथा प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया			
20	सार्वजनिक कुआ निर्माण (1) तालाब मे सार्वजनिक कुआ निर्माण व मुंडेर कार्य	प्रस्ताव क्र. 20. प्रस्तावित सार्वजनिक कुआ निर्माण का कार्य सर्व सम्मति से किया पारित किया गया	सार्वजनिक कुआ निर्माण 4,00,0000 रु = 4,00,0000/-	पंचायती राज विभाग जलग्रहण विभाग	
21	मनरेगा योजना (1) रा.प्रा.वि. ... पानी के लिए ... योजना निर्माण कार्य				
	गाँव सभा की कार्यवाही को	अग्रसित करने के लिए : अध्यक्ष द्वारा गाँव सभा की बैठक की ...	गाँव सभा बैठक में उपस्थित लोगों को धन्यवाद दे समापन किया गया	धन्यवाद सचिव गाँव सभा	
	अध्यक्ष गाँव सभा				

(11) चेकडैम निर्माण के सम्बन्ध में विचार
(12) एनीकट निर्माण/मरम्मत के सम्बन्ध मे विचार

प्रस्ताव अंतिम पृष्ठ